अध्याय 4 पाप

आइए कल्पना करें कि एक मित्र ने आपको एक महल दिया हो जो खूबसूरत चीजों से भरा हुआ हो। यह आपके लिये है ताकि आप इसका आनन्द लें। केवल एक ही निवेदन वह आपसे करता है, "कृपया इसकी चोटी पर से न कूदें क्योंकि आप मर जाएंगे।"

तब एक शत्रु आपके महल में आता है। वह कहता है, "किसने कूदने को मना किया है? आप कूद सकते हैं। आप अजीब आनन्द महसूस करेंगे। आपको मालूम होगा कि उड़ने में कैसा महसूस करेंगे। आपको मालूम होगा कि उड़ने में कैसा महसूस होता है। आप विभिन्न दृष्टि-क्षेत्र से अपने महल को देख सकेंगे। आप इस बात की चिन्ता न करें कि भूमि पर गिरने से आपका क्या होगा। केवल उन बातों पर विचार करें कि नीचे जाते हुए कितनी नई बातों की जानकारी आपको मिलेगी।"

क्या आप अपने महल की चोटी पर चढ़कर छलांग लगाएंगे? बेशक नहीं। यह एक मूर्खता होगी कि अपने शत्रु पर भरोसा करके इसके कहे अनुसार करें।

आदम और हव्वा ने कुछ ऐसा ही अनुभव किया। परमेश्वर ने उन्हें एक खूबसूरत बाग में रख कर उसकी सारी चीजों के ऊपर अधिकारी नियुक्त

किया। उसने उन्हें अनुमति दे रखी थी कि केवल एक वृक्ष को छोड़ बाक़ी सब के फलों को वे खा सकते हैं। तब शत्रु शैतान ने आकर उन्हें किसी रीति से उस वृक्ष के फल को खाने को कहा — कि उससे उनकी कोई हानि नहीं होगी। उन्होंने उसकी बातों पर भरोसा किया बजाये परमेश्वर की। कितनी मूर्खता!

जैसे कि हमने पहले पाठ का अध्ययन किया, मनुष्य अपनी सृष्टि के समय सिद्ध था किन्तु आज्ञा न मानने के द्वारा पाप उस के जीवन में आया। हम पाप की परिभाषा कैसे दें? क्या यह आदम के द्वारा संसार में आया? पाप के लिये कौन सा दण्ड है? क्या इससे बचाव का कोई उपाय है? बाइबल की आयतें जो इस पाठ में हैं हमें इनका उत्तर देंगी।

इस पाठ में आप अध्ययन करेंगे......

पाप की परिभाषा

पाप की उत्पत्ति

पाप से छुटकारा

यह पाठ आपकी सहायता करेगा कि आप ....

- पाप की प्रकृति एवं परिणाम का वर्णन कर सकें।
- मनुष्य के पाप को दूर करने में मसीह के कार्य का सम्मान कर सकें।

पाप की परिभाषा

उद्देश्य १. पाप की व्याख्या को समझाना।

परमेश्वर की व्यवस्था का पालन न करना पाप है। यह परमेश्वर को ऐसा कहना है कि "मैं तुम से अधिक महत्वपूर्ण हूं! मैं तुम्हारे वचन को अन्तिम फैसला नहीं मानता।"

"मुझे सीमित करने का किसी को अधिकार नहीं", आप ऐसा कह सकते हैं। "जो मुझे अच्छा लगे मैं वही करूंगा।" परमेश्वर ने जो हमारे लिये सीमाएं निर्धारित कर रखी हैं, उसका एक कारण है — हमारी सर्वोत्तम भलाई के लिये। उदाहरण के लिये, परमेश्वर जानता है कि ईर्ष्या और जलन अत्यधिक सिरदर्द उत्पन्न कर सकती है। और बदला लेने की भावना नासूर उत्पन्न कर सकती है। यही विचार-भावना दूसरों को भी दुःख पहुंचाती है। परमेश्वर ने अपना प्रेम इस तरह प्रगट किया कि हमारी सुरक्षा के लिये उसने कुछ सीमाएं या नियम निर्धारित किए। इन सीमाओं का उल्लंघन करना हमारे लिये पाप है। पहला यूहन्ना ३:४ कहता है "जो कोई पाप करता है वह व्यवस्था का विरोध करता है।"

"तो क्या यह सही है कि मैं वह सब कुछ कर सकता हूं जिससे मुझे या दूसरों को चोट न पहुंचती हो?" नहीं, सब चीजें तभी सही हैं जब वे परमेश्वर के द्वारा निर्धारित सीमा के अन्तर्गत हों। हम सोच सकते हैं कि कुछ बातें हमें या दूसरों को चोट नहीं पहुंचाती किन्तु वे हमारे विश्वास के विरुद्ध हो सकती हैं। उदाहरण के लिये, किसी जगह माता-पिता ने सोचा कि बच्चों को डांट-फटकार के विषय में हम परमेश्वर की व्यवस्था को नहीं मानेंगे क्योंकि इससे बच्चे निरुत्साहित एवं भ्रमित हो जाएंगे। अब हाल ही में एक पत्रिका में छपा लेख हमें सूचित करता है कि "अब समय ऐसा है कि अपने बच्चों को अनुशासित करें।" मनुष्य की विचारधारा बदलती रहती है। कुछ समय तक तो वह कहेगा कि एक चीज दूसरों को चोट नहीं पहुंचाती किन्तु कुछ

समय के बाद कहेगा कि यह चोट पहुंचाती है। हमारी सुरक्षा एवं भलाई इसी में है कि हम परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करें, भले ही हम उनके कारणों को समझते हो या नहीं।

जो आपको करना है

इन अभ्यासों के लिये ऐसे उत्तर का चुनाव करें जो दिए गए वाक्य को अच्छी तरह पूर्ण कर सके। अपने चुनाव के सामने के अक्षर में वृत्त खींच दें।

१. पाप

अ. वह है जो आप सोचते हैं कि कोई चीज़ गलत है।

ब. वह है जो दूसरे लोग कहें कि कोई चीज़ गलत है।

स. वह है जो हमें मालूम हो जाता है कि कोई चीज़ गलत है।

ड. परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति विद्रोह एवं उसका उल्लंघन करना है।

२. परमेश्वर ने मनुष्य के व्यवहार एवं आचरण के लिए कुछ सीमाएं निर्धारित की हैं क्योंकि वह

अ. चाहता था कि आदम और हव्वा को निरुत्साहित करे।

ब. नहीं चाहता कि मनुष्य स्वतंत्र होकर जीवन का आनन्द ले सके।

स. मनुष्य से प्रेम रखता है एवं उसकी सर्वोत्तम भलाई चाहता है।

३. परमेश्वर के द्वारा निर्धारित सीमाओं का उल्लंघन

अ. ठीक है यदि उससे किसी को चोट न पहुंचती हो।

ब. तब तक ठीक है जब तक किसी को मालूम न हो।

स. कभी-कभी किसी समस्या से छुटकारा प्राप्त करने के लिए आवश्यक है।

ड. कभी-कभी नहीं करना चाहिए।

पाप की उत्पत्ति

उद्देश्य : २. कथनों की जानकारी प्राप्त करना जो बताती है कि पाप संसार में कैसे आया।

शैतान ने मनुष्य की परीक्षा ली और मनुष्य परीक्षा में गिर गया। पहला यूहन्ना ३:८ कहता है "जो कोई पाप करता है वह शैतान की ओर से है क्योंकि शैतान आरम्भ ही से पाप करता आया है" शैतान के द्वारा पाप संसार में आया किन्तु इससे मनुष्य दोषमुक्त नहीं हो सकता। इसके लिये मनुष्य भी जिम्मेदार है।

आदम को शैतान के द्वारा ली गई परीक्षा में गिरने की आवश्यकता न थी। हमें मालूम है कि परमेश्वर हमारी परीक्षा नहीं लेता। याकूब १:१३-१४ बताता है :

जब किसी की परीक्षा हो तो वह यह न कहे कि मेरी "परीक्षा परमेश्वर की ओर से है" क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है और न वह किसी की परीक्षा आप करता है।

परीक्षा लिया जाना पाप नहीं है। यहां तक कि यीशु की भी परीक्षा शैतान के द्वारा ली गई। किन्तु परीक्षा में गिर जाना पाप है। यदि आदम और हव्वा परीक्षा में न गिरते तो संसार कितना फर्क होता।

क्या हुआ जब मनुष्य ने पाप किया? परमेश्वर ने कहा था कि वह मर जाएगा। पाप करते ही वह मरा नहीं जैसे कि मौत के विषय में हम जानते हैं किन्तु वह तुरन्त नाशवान बन गया। मौत ने उसके शरीर, प्राण एवं आत्मा के विरुद्ध कार्य करना शुरु कर दिया।

एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया और पाप के द्वारा मृत्यु आई और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई इसलिए कि सबने पाप किया। (रोमियों ५:१२)।

हां सभी लोग पापी है। "सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं। (रोमियों ३:२३)

पाप का दण्ड आज हमारे लिये वही है जो आदम और हव्वा को दिया गया था — मौत। रोमियों ५:१२ इसे इस तरह व्यक्त करती है "मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई।" रोमियों ६:२३ में हम पढ़ते हैं "पाप की मज़दूरी मृत्यु है" पाप करते ही मनुष्य शारीरिक रूप से नहीं मरता। कभी-कभी तो ऐसा भी जान पड़ता है कि वह और उन्नति कर रहा है। तौ भी मौत वहां कार्यशील है और अन्त में वह न सिर्फ शारीरिक रूप से किन्तु आत्मिक रूप से भी मर जाएगा। आत्मिक मृत्यु का अर्थ परमेश्वर से अनन्तकाल तक अलग हो जाना है।

जो आपको करना है

इन अभ्यासों के लिए ऐसे उत्तरों का चुनाव करें जो प्रत्येक वाक्य को सही-सही पूरा कर सकें। अपने चुनाव के सामने के अक्षर के चारों ओर वृत्त खींच दें।

४. इस संसार में पाप आया :

अ. शैतान के द्वारा जो कि आरम्भ से ही पाप करता आया है।

ब. क्योंकि आदम शैतान की परीक्षा में गिर गया।

स. जब आदम ने जान बूझ कर परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया।

५. चूंकि पाप संसार में आया इससे :

अ. शैतान को किसी की परीक्षा लेने की आवश्यकता नहीं है।

ब. सब पापी हैं एवं इनकी परीक्षा हो सकती है।

स. शारीरिक और आत्मिक दो मौत है।

पाप से छुटकारा

उद्देश्य ३. व्याख्या करना कि एक पापी पाप के दण्ड से छुटकारा कैसे प्राप्त कर सकता है।

क्या आपको वह कहानी याद है जो मैंने आपको इस पाठ के शुरु में बताई थी? वह व्यक्ति जो चोटी से छलांग लगाएगा वह निश्चय मरेगा। किन्तु यदि एक मित्र उस खिड़की के नीचे ही एक मजबूत सा जाल लगा दे तो क्या होगा? वह जो चोटी से कूदेगा वह जाल में फंस जाएगा और उसका जीवन बच जाएगा।

परमेश्वर ने हमारे लिये एक रास्ता तैयार किया है जिससे हम पाप के दण्ड से अर्थात् आत्मिक मौत एवं परमेश्वर से अलगाव से बच सकते हैं। यह रास्ता है यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करना। भविष्य के पाठों में हम उन पदों के विषय में सीखेंगे जो बताती है कि हम कैसे वहां तक पहुंच सकते एवं उद्धार प्राप्त कर सकते हैं। अभी यह अच्छा होगा कि हम नीचे दी गई दो आयतों को मुखाग्र कर लें जो बताती है कि हम पाप के दण्ड से छुटकारा कैसे प्राप्त कर सकते हैं?

परमेश्वर हमारे पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा (रोमियों ५:८)।

यदि हम अपने पापों को मान लें तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सारे अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है (१ यूहन्ना १:९)।

जो आपको करना है

६. पहला यूहन्ना ४:९-१० पढ़ें और नीचे दिये गये खाली स्थानों को भरें।

परमेश्वर ने अपना प्रेम अपने .... को संसार में .... के द्वारा प्रगट किया, ताकि हम ....द्वारा .... पाएं। यही प्रेम है : यह नहीं कि हमने परमेश्वर से .... किया किन्तु यह कि उसने हमसे ....किया और अपने .... को भेजा जिससे हमारे .... का .... हो सके।

७. नीचे दिये गये कथनों को थोड़े शब्दों में पूरा करें

एक पापी अपने पाप के दण्ड से छुटकारा केवल ....

....

प्राप्त कर सकता है।

अपने उत्तरों की जांच करें

१. ड. परमेश्वर की व्यवस्था का विरोध एवं उसका उल्लंघन।

५. ब. हर एक पापी है एवं उसकी परीक्षा हो सकती है।

स. शारीरिक और आत्मिक दो मौतें है।

२. स. मनुष्य से प्रेम रखता है एवं उसकी सर्वोच्च भलाई चाहता है।

६. पुत्र, भेजने, उसके, जीवन, प्रेम, पुत्र, पापों, प्रायश्चित।

३. ड. कभी भी नहीं करना चाहिए।

७. यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करने के द्वारा।

अ. शैतान के द्वारा जो आरम्भ से ही पाप करता आया है।

ब. क्योंकि आदम शैतान की परीक्षा में गिर गया।

स. जब आदम ने जान बूझकर परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया।

आपकी टिप्पणी के लिए